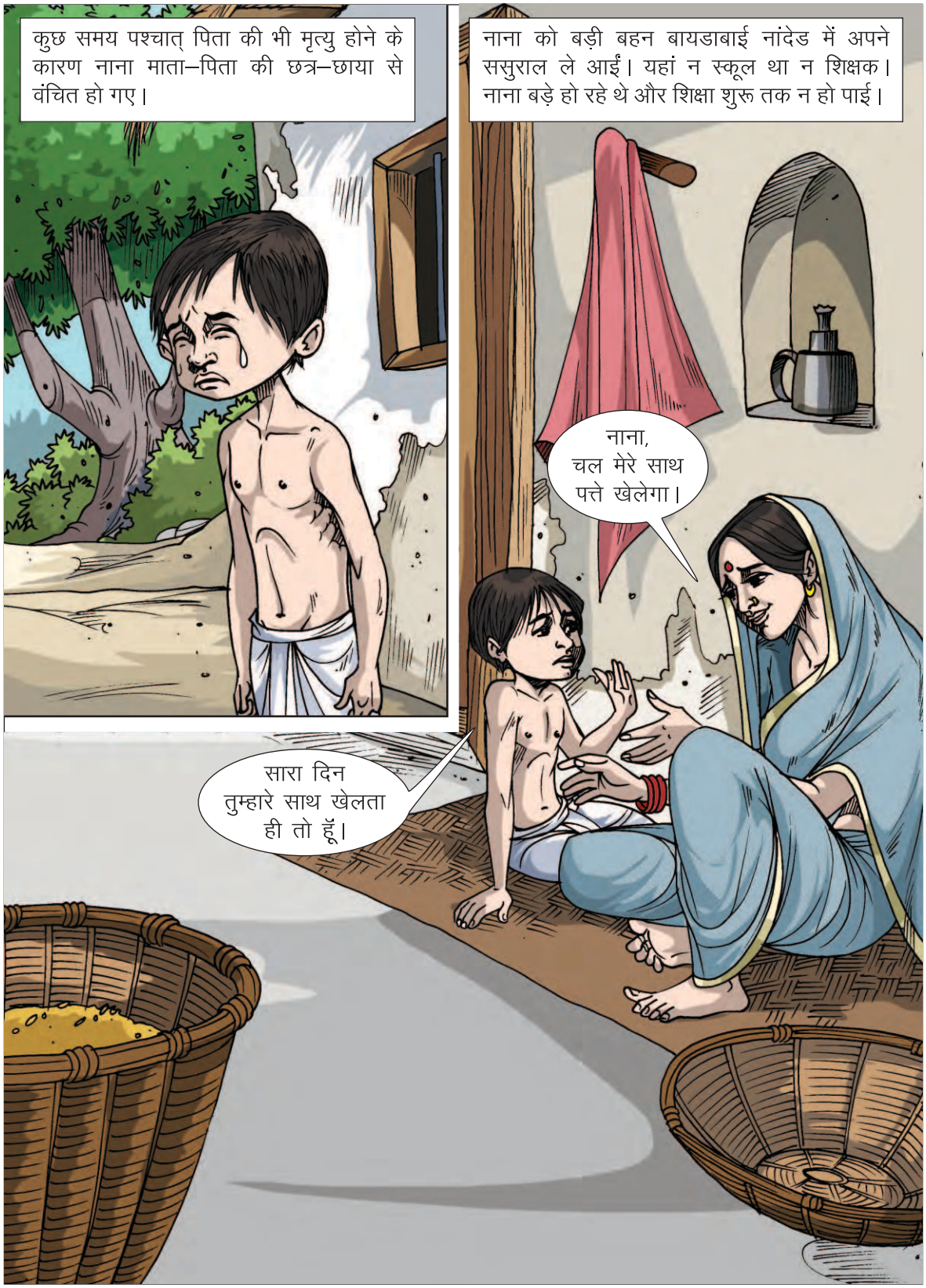
कुछ समय पश्चात् पिता की भी मृत्यु होने के कारण नाना माता–पिता की छत्र–छाया से वंचित हो गए।
नाना को बड़ी बहन बायडाबाई नांदेड में अपने ससुराल ले आईं। यहां न स्कूल था न शिक्षक। नाना बड़े हो रहे थे और शिक्षा शुरू तक न हो पाई।
नाना, चल मेरे साथ पत्ते खेलेगा।
सारा दिन तुम्हारे साथ खेलता ही तो हूँ।